ओ३म्

वेद क्यों? और क्या?

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद

प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

॥ ओ३म् ॥

वेद क्यों ? और क्या ?

लेखक :
(शताधिक पुस्तकों के प्रणेता)
प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

प्रकाशक :
मदनलाल आर्य गिदड़बाहा (पंजाब)

प्राप्ति-स्थान :

आर्यसमाज गिदड़बाहा मण्डी (पंजाब)

डा० अशोक आर्य,
११६, मित्र कालोनी, मण्डी डबवाली (हरियाणा)

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय प्रकाशन मन्दिर,
नई सूरज नगरी, अबोहर-१५२११६

श्रीगणेश-गरिमा गोयल,
प्रेम-मणिनिवास, गली पत्ते वाली, नया बाज़ार, देहली-६

संस्करण : २०६१ वि०

मूल्य : दस रुपये

शब्दसंयोजक :
वैदिक प्रेस, कैलाशनगर, दिल्ली-३१

मुद्रक :
राधा प्रेस, गांधीनगर, दिल्ली-३१

~: समर्पण :~

जिन्होंने इस युग में
अपनी वीरता, धीरता, शूरता, विद्वत्ता,
तप, त्याग व कर्मण्यता से वेद-प्रचार आन्दोलन का
एक स्वर्णिम इतिहास बनाया।
जिनके निर्मल जीवन से अनेक युवकों ने
प्रेरणा प्राप्त कर धर्म-सेवा व जाति रक्षा को
जीवन का लक्ष्य बनाया।
मैं जीवन सुत

राजेन्द्र जिज्ञासु

कथनी करनी के उस धनी

पूज्यपाद महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

की पावन स्मृति में
इस पुस्तक को समर्पित करता हूं।

***

"राजेन्द्र जिज्ञासु"

श्रद्धा-सुमन

पंजाब प्रदेश अन्तर्गत मुक्तसर ज़िला के गुरुसर गांव में लाला पालाराम जी के दो सुपुत्र हुए, बड़े लाला बिहारीलाल तथा छोटे लाला हंसराज । लाला हंसराज जी मेरे जन्मदाता व राजोदेवी मेरी जननी थीं, जिनकी गोद में खेलने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ । लाला बिहारीलाल जी व माता द्रोपतीदेवी ने मुझे गोद लेकर मेरा पालन पोषण किया और आज मैं जो कुछ हूं वह उन्हीं की कृपा का परिणाम है । पूज्य पिता द्वय का जन्म एक निर्धन परिवार में हुआ था इसलिए दोनों भाइयों को औपचारिक स्कूली शिक्षा तो नहीं मिल पाई, परन्तु दोनों भाइयों ने अपने दृढ़ निश्चय, ईमानदारी और कठोर परिश्रम से अपने परिवार और व्यापार को सफलता के साथ स्थापित किया । आपने अपने व्यापार में अनेक लोगों को सहयोगी बनाया, सभी के साथ भाइयों जैसे सम्बन्ध बनाए और अपनी अन्तिम सांस तक व्यापारिक साझेदारी को निभाया । पूज्य पिता लाला बिहारीलाल जी की सामाजिक कार्यों में भी रुचि थी । वह अनेक वर्षों तक स्थानीय गोशाला की प्रधान के रूप में सेवा करते रहे । नगर में डी०ए०वी० महिला कालेज की स्थापना में तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग देते रहे । धर्मबोर्ड गिदड़बाहा के सक्रिय सदस्य रहे । यद्यपि वह आर्यसमाज से परिचित नहीं थे तो भी पूज्य जिज्ञासु जी से मेरा परिचय पिता जी ने ही करवाया था और इसी परिचय ने मेरे लिए

आर्यसमाज के द्वार खोले । किसी प्रकार के पाखण्ड में उनकी रुचि नहीं थी परन्तु ईश्वर में गहरी निष्ठा थी । वह कभी कभी पंजाबी की निम्न पंक्तियाँ गुनगुनाया करते थे–

दुनियां तेरा बाग बगीचा, तू दुनिया दा माली ।
गिन गिन के तू लावें पौधे, आप करें रखवाली ॥
इक नां नूं फल इक ना देवें, जेड़े जान जहानो खाली ।
इक नां नूं फल ऐनें देवें, जेहड़ी सह ना सकदी डाली ॥

मेरी जननी छोटी अवस्था में ही सन् १९६९ में हमें छोड़ गईं । पूज्या माता द्रोपतीदेवी जी का निधन १५ अक्तूबर १९८१ को तथा पूज्य पिता लाला बिहारीलाल जी का निधन ५ जनवरी १९८२ को हुआ ।

हमारी मां का यह सपना था कि जिस प्रकार उनके दो दामाद डाक्टर तथा बहुत सफल व्यवसायी हैं उनके पुत्र भी पढ़ लिख कर देश–विदेश में अपने परिवार का नाम उज्ज्वल करें । परन्तु मैं और राकेश पारिवारिक व्यवसाय में आ गए । छोटे भाई प्रवीण ने ऊंची शिक्षा तो प्राप्त की परन्तु उसने भी व्यापार को ही अपना लिया । अतः मां का यह सपना अधूरा रह गया ।

परन्तु उनकी मृत्यु के बहुत वर्षों बाद उनका बड़ा पौत्र प्रवेश दुनिया की सबसे बड़ी कम्प्यूटर कम्पनी IBM में अमेरिका में इंजीनियर के रूप में कार्यरत हो कर मां का सपना पूर्ण कर रहा है । काश आज मां जीवित होतीं…।

मुझे १९७० में आर्यसमाज की लग्न लगी तब हमारे घर हवन हुआ था उस समय मां बहुत प्रसन्न हुई थीं । आज मेरे पौत्र गर्व सपुत्र श्रीमति सुषमा एवम् प्रिय अश्वनीकुमार के जन्म की खुशी में तथा प्रिय प्रवेश के

सपरिवार स्वदेश आगमन पर परिवार में सामवेद पारायण-यज्ञ हो रहा है, चारों ओर आनन्द बरस रहा है । परन्तु मेरी आंखें छोटे भ्राता राकेश को खोज रही हैं...... और यह खोज अनवरत चलती रहेगी ।

—मदनलाल आर्य

विशेष टिप्पणी—श्री मदनलाल जी आर्य के उत्थान व जीवन-निर्माण की कहानी बड़ी रोचक व प्रेरक है । आपकी निस्वार्थ समाज सेवा व कर्मठता दूसरों के लिए एक उदाहरण है। आप आर्यसमाजी कैसे बने इस विषय पर वह स्वयं कभी कुछ लिखेंगे । मैं जब गिदड़बाहा डी०ए०वी० कालेज की स्थापना के लिए वहां रहकर धन संग्रह करता था तो ला० बिहारीलाल जी से मेरा विशेष प्रेम हो गया । एक दिन मुझे कहा, "हम आपको अपना बेटा सौंपते हैं, उसे भी कुछ बना दें ।" विद्यार्थी जीवन में ही मदनलाल जी ने आर्यसमाज गिदड़बाहा का कार्यभार संभाल लिया । इससे वहां के पुराने आर्यसमाजी बहुत प्रसन्न हुए। वर्षों बाद मदनलाल जी ने वहां आर्यसमाज का उत्सव करवाया ।

लाला जी की एक अविस्मरणीय घटना यहां देना आवश्यक है । एक बार मैं गिदड़बाहा केरल के लिए कुछ दान लेने गया। लाला जी ने पूछा, "क्या मदनलाल भी आपको ऐसे परोपकारी कार्यों के लिए कुछ देता है या नहीं?" इससे पाठक उनके निर्मल भावों व दानशीलता को समझ सकते हैं । शेष फिर कभी ।

—राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

प्राक्कथन

ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता, उसके आविर्भाव व वेदों की महत्ता पर गत संवा सौ वर्षों में देश विदेश में बहुत कुछ लिखा गया है । महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व पश्चिमी (ईसाई) लेखकों द्वारा वेद की निन्दा के लिए लिखे गये साहित्य की बाढ़ सी आ गई । पश्चिम के अन्धानुकरण व दासता की हीन मनोवृत्ति के कारण अंग्रेजी पठित भारतीय बाबुओं ने भी वेद का उपहास उड़ाने में कोई कमी नहीं छोड़ी ।

भारतीय नेता व पण्डित इस बाढ़ को रोकने का साहस न बटोर सके । राजाराम मोहन राय जैसे महापुरुष वेद तक पहुंच ही न पाए । उन्होंने उपनिषदों को ही वेद समझ लिया। महर्षि दयानन्द की जन्म जन्मान्तरों की सुप्त साधना जागी । वे कार्यक्षेत्र में उतरे । आपने विश्व के सब वेद-विरोधियों को चुनौती देते हुए ललकारा । आपने वेदोद्धार के लिए सब दुःख कष्ट झेले । आपने अपनी प्यारी जान तक भी वेद पर वार दी ।

महर्षि दयानन्द के अद्वितीय शिष्य पं० गुरुदत्त जी ने पश्चिमी विचारों की इस विनाशकारी बाढ़ को रोकने में एक ऐतिहासिक कार्य किया । इसे एक बौद्धिक चमत्कार ही कहना चाहिए कि मात्र पौने छबीस वर्ष की अयु में इस मनीषी (Genius) ने अपनी अलौकिक प्रतिभा से तब पश्चिमी लेखकों को झकझोर कर रख दिया । उनके पश्चात् आर्य विद्वानों ने वेद की महिमा व मर्म पर बहुत कुछ लिखा ।

आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथियों ने विधर्मियों को वेद की महत्ता स्वीकार करने में विशेष सफलता प्राप्त की। कविरत्न 'प्रकाश' जी की ये पंक्तियाँ आर्य शास्त्रार्थ महारथियों की इस उपलब्धि का संकेत करती हैः–

करते थे हमेशा चीख चीख अपमान जो पावन वेदों का।
सिर उनका वेदों के आगे झुकवा दिया ऋषि दयानन्द ने ।।

वेदोद्धार व वेद–प्रचार के आन्दोलन में इन शास्त्रार्थ महारथियों का योगदान स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है ।

वेद पर किये गये प्रत्येक प्रहार का उत्तर देने में जिन साहित्यकारों व विद्वानों ने निरन्तर लेखनी चलाई और अपने जीवन आहूत कर दिये, उनको शत शत नमन । ऐसी पुण्यात्मओं में स्वामी दर्शनानन्द जी, पं० शिव शंकर जी, स्वामी वेदानन्द जी, डा० बालकृष्ण जी, पं० चमूपति जी, पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, मास्टर लक्ष्मण जी, मेहता जैमिनी जी, पं० गंगाप्रसाद जी चीफ जज, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, पं० धर्मदेव जी, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, स्वामी सत्याप्रकाश जी, पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक आदि के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं ।

सन् १९५२ के आसपास पं० धर्मदेव जी लिखित ट्रैक्ट Glory of the Vedas से मैं बहुत प्रभावित हुआ । श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत The Vedas Holy Scriptures of Aryans भी अत्यन्त विचारोत्तजक व पठनीय था । इन्हें पढ़कर मेरा जी करता था कि मैं भी वेद महिमा पर कुछ लिखूं ।

पूज्य उपाध्याय जी ने भी एक बार ऐसी एक पुस्तिका लिखने का आदेश दिया था । उनके जीवनकाल

में तो मैं यह कार्य न कर पाया । अब उनकी मनोकामना पूरी करने का मुझे सन्तोष है । फार्सी में कहते हैं, "**देर आयद दुरुस्त आयद**' विलम्ब तो ४० वर्ष का हो गया परन्तु इस विलम्ब से भी बड़ा लाभ हुआ है । '

हर्ष का विषय है कि श्री वेदभूषण जी नगरोटा बगवां (हिमाचल प्रदेश) की प्रबल प्रेरणा के फल स्वरूप एक बहुत पुरानी उत्कट चाह मूर्त रूप ले रही है । इस पुस्तिका के प्रसार व प्रकाशन के लिए श्री मदनलाल जी आर्य को धन्यवाद देना तो एक लोकाचार ही होगा । हमें आशा है कि सब प्रकार के पाठक इस पुस्तिका का लाभ उठायेंगे । यह जनोपयोगी तो है ही, विद्वानों के लिए भी इस में पर्याप्त नई सामग्री है ।

रक्तसाक्षी पं० लेखराम के अमूल्य सन्देश को आर्यसमाज ने अनसुना कर दिया । संस्थाओं के कीच बीच फंसा यह समाज साहित्यिक क्षेत्र में पिछड़ गया । आर्यसमाज में जो ठोस व उत्तम साहित्य आज तक प्रकाशित हुआ है उसका श्रेय व्यक्तियों को प्राप्त है । संगठन को नहीं । पं० गुरुदत्त, महात्मा मुंशीराम, पं० लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी वेदानन्द जी बहुत कुछ लिख पाये तो इसका कारण उनका व्यक्तिगत प्रयास था । कला प्रेस के कारण पूज्य उपाध्याय जी के सहस्रों पृष्ठ छप सके । अपने साहित्य के प्रकाशन की व्यवस्था का जोखिम उठाकर ही हम अपना साहित्यिक शतक बना पाये । बहुत कुछ कर लिया—

बहुत निकल मिरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले ।

अभी बहुत कुछ करने की चाह है । कई स्वप्न संजो रखे हैं । देखें आगे क्या होता है । जिन मित्रों का

व प्रेमी पाठकों का वैदिक साहित्य प्रसार में हमें अब तक प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में सहयोग मिलता आया है, हम हृदय से उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं । इस पुस्तिका के लेखन व मुद्रण में पाठक न्यूनतायें तो पायेंगे ही । गुणियों के सुझाने पर हम अगले संस्करण में सुधार कर देंगे ।

हम पूरे विश्वास से यह कहेंगे कि इस पुस्तिका में हमने ऐसी बहुत सी नई सामग्री व प्रमाण दिये हैं जो गत साठ वर्षों में किसी अन्य पुस्तक में नहीं दिये गये । हमने पीसे को नहीं पीसा । मौलाना शहाबुद्दीन लिखित मलयालम पुस्तक 'वेद-दर्शनम्' श्री अनवर शेख कृत Vedic Civilisation उनका सम्पूर्ण उर्दू साहित्य तथा श्री स्टीफन नैप (Stephen Knapp) कृत The Secret Teachings of the Vedas भी हमारी दृष्टि से निकली हैं । पुस्तक का आकार इनके प्रमाण देने में हमारे लिए बाधक बन गया ।

विनीत :

राजेन्द्र जिज्ञासु
कविता कुञ्ज/वेद सदन
अबोहर-१५२११६

पं० लेखराम बलिदान पर्व
६ मार्च, सन् २००५

॥ ओ३म् ॥

वेद क्यों ? और क्या ?

संसार की वे जातियां और समुदाय जो सृष्टि–कर्त्ता की सत्ता में विश्वास करते हैं, उन सबका यह भी मानना है कि सृष्टि–कर्त्ता प्रभु करुणा सागर है, दयालु है, कृपालु है। सृष्टि की रचना कैसे हुई ? क्यों हुई ? कब हुई ? किसके लिये सृष्टि रची गई ? इन प्रश्नों का उत्तर भले ही सब न्यारा न्यारा दें और सृष्टि–रचयिता के स्वरूप के बारे में चाहे सबकी एक सी मान्यता न हो परन्तु, सारा आस्तिक जगत् इस विषय में एक मत है कि जगत् की रचना करने वाले ने जीवों के भले के लिए सब कुछ दिया है।

प्रभु ने क्या नहीं दिया ?:–

किसी भी मत में आस्था रखने वाले आस्तिक से आप बात करके देख लीजिये। सब एक स्वर से यह कहते हैं परमेश्वर ने मनुष्यों के सर्वांगीन कल्याण के लिए सब कुछ दिया है। जल, वायु, पेड़, पौधे, वनस्पतियाँ, फल, फूल, अन्न, धन, धातु, सूर्य, चन्द्र, अग्नि पवन….। सब कुछ जीवों के उपयोग प्रयोग के लिये दिया गया है। प्रभु का एक नियम बड़ा विचित्र है। मनुष्य–सृष्टि का नियम तो यह है कि आवश्यकता पहले होती है आविष्कार बाद में होता है परन्तु परमात्मा की सृष्टि का नियम इसके विपरीत है। प्रभु पहले आविष्कार करता है फिर आवश्यकता उत्पन्न होती है। आंखों से पहले सूर्य बनाया गया। प्यास से पहले जल बन चुका था। प्राणियों की उत्पत्ति से पूर्व

धरती बन चुकी थी । भूख से प्राणियों को चिल्लाना नहीं पड़ा था । अन्न, वनस्पतियां और फल, फूल पहले ही थे। वायु पहले से थी । श्वास लेने वाले बाद में जन्मे । बच्चे का जन्म होते ही माता के स्तनों में दूध बहने लगता है ।

ज्ञान-चक्षु क्या नहीं दिया ?:-

अब विचारणीय प्रश्न यह है कि प्रभु ने मनुष्य को बुद्धि भी तो दी है । मनुष्य में Instinct of Curiosity जानने की जिज्ञासा भी तो सदा से है । क्या दयानिधि परमेश्वर ने मनुष्य को बुद्धि के लिए ज्ञान नहीं देना था ? मनुष्य की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए भी सृष्टि रचना के समय अर्थात् आदि सृष्टि में ही ईश्वरीय ज्ञान का आविर्भाव होना चाहिए । इस सत्य को स्वीकार करने में ननुनच करना या हठ व दुराग्रह का परिचय देना अशोभनीय है । **ऐसी सोच मानव बुद्धि का तिरस्कार ही तो है ।**

एक और पहलू से भी आप सोचिये । मनुष्य को परमेश्वर ने इतना कुछ दिया है कि हम प्रभु के दिये पदार्थों की गिनती भी नहीं कर सकते । बहुत कुछ देकर प्रभु ने बुद्धि भी दे दी । बुद्धि को ज्ञान चाहिए । अब आप सोचिये कि यह कहां का न्याय है कि परमात्मा जगत् के असंख्य पदार्थ देकर उनके उपयोग प्रयोग की विधि विधान मनुष्य को न देता । आप देखते हैं कि जब कोई कम्पनी एक नई मशीन बनाकर मार्कीट में लाती है तो मशीन की बिक्री के समय ग्राहक को Instruction Book (प्रयोग विधि-पुस्तिका) भी साथ के साथ ही दी जाती है । एक बार हमने एक मशीन ले ली । प्रयोग विधि लेना भूल गए । हमारे लिए तो बहुत बड़ा संकट खड़ा हो गया । हमें जो हानि उठानी

पड़ी, यहां यदि उसका वर्णन करें तो पाठक हमारी बुद्धि पर हंसेंगे ।

रचना को न मानना:-

जो लोग सृष्टि के आदि में ईश्वरीय ज्ञान के आर्विभाव को नहीं मानते वे भी दयालु कृपालु प्रभु की सर्वज्ञता का उपहास ही उड़ाते हैं । मित्रो ! रचना को तो मानना और इस रचना (प्रभु के काव्य को-ज्ञान को) न मानना यह भी घोर नास्तिकता है । जब भी कोई रेलगाड़ी चलाई जाती है तो साथ के साथ समय-सारणी (Time Table) भी छप जाता है । गाड़ी चलने के महीनों व वर्षों के बाद रेलवे के टाईम टेबल की घोषणा का कुछ अर्थ नहीं बनता ।

सब मानते हैं:-

अनादि काल से हमारे ऋषि-मुनि और संसार के विचारक सुधारक यह मानते आए हैं कि परमदेव परमेश्वर ने सृष्टि के आदि में चार ऋषियों की हृदय गुहा में (Cave like hearts of the seers) अपने नित्य अनादि ज्ञान वेद का प्रकाश किया । बाइबल व कुरान तक भी दबे स्वर में इस सत्य को स्वीकार करते हैं । ये प्रमाण हम आगे चलकर देंगे ।

सर्वोत्कृष्ट ही जियेगा:-

डार्विन ने जगत् के सामने अपना विकास मत रखा। इस विकासवाद की मान्यता के अनुसार संसार में Survival of the fittest सर्वोत्कृष्ट ही जी सकता है या जीता है । हम यहां विकास मत और विकासवादियों की सर्वोत्कृष्ट के जीने की मान्यता पर कुछ न कहते हुए यह कहेंगे कि सारे

संसार के आस्तिक व नास्तिक लोग भले ही वे कुछ भी मानते हैं, इस बात पर एक मत हैं कि वेद संसार के पुस्तकालय में प्राचीनतम ग्रन्थ है । वेद से पुरानी पुस्तक आज तक कहीं नहीं मिली । भारत में अंग्रेजी राज में सरकार द्वारा पोषित प्रचारित पश्चिमी विद्वानों ने वैदिक धर्म व दर्शन का अवमूल्यन किया, वेद मन्त्रों के अर्थों से अनर्थ किया, वैदिक विचार धारा की खिल्ली उड़ाई परन्तु, सरकार के इन सब वेतन भोगी स्कालरों को भी यह मानना व लिखना पड़ा कि वेद ही संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं ।

अब विचारशील सज्जनों से हम कहना चाहेंगे कि Survival of the fittest सर्वोत्कृष्ट ही जीता है की विकासवादी मान्यता को यहां वेद पर भी लागू करें और **पूर्वाग्रह मुक्त होकर यह घोषणा करने का साहस करें कि सर्वोत्कृष्ट होने के कारण ही वेद आज तक सुरक्षित हैं ।** वेद की रक्षा करने वाले तपस्वी विद्वानों ने वेद के एक एक मन्त्र, एक एक अक्षर व एक एक मात्रा को कण्ठस्थ करके वेद की रक्षा की है ।

पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का कथन है—इस दीर्घकालीन सृष्टि के इतिहास में सैकड़ों मत मतान्तर और धर्मशास्त्र बने और बिगड़ गये । कराल काल के थपेड़ों से वेद का बचा रहना यह सिद्ध करता है कि कुदरत वेदों की रक्षा करती है । "जैसे सैकड़ों तूफान जिन से बड़े-बड़े मनुष्य निर्मित दीपक बुझ जाते हैं, सूर्य को नहीं बुझा सकते, इसी प्रकार वेद भी हैं" । सृष्टि का इतिहास कुछ शताब्दियों का नहीं, करोड़ों वर्षों का है । इतने लम्बे काल में संसार में कितनी उथल पुथल हो चुकी है । संसार में अनेक परिवर्तन हो चुके

हैं। वेद आज भी सुरक्षित है । यह तथ्य वेद की उपयोगिता व योग्यता को प्रमाणित करता है ।

एक हास्यास्पद कथनः–

चार अक्षर पढ़कर कुछ लोग कई बार यह कहते सुने गये हैं कि आज इतने पुराने वेदों की बात करना ऐसा ही है जैसे वायुयान युग में बैलगाड़ी की बात करना । देहली में विज्ञान भवन में मुसलमानों के एक कार्यक्रम में एक मौलाना ने यह बात बड़े लच्छेदार शब्दों में बड़ा बल देकर कही तथा कुरान को ईश्वर का नवीनतम व अन्तिम विधान बताया । यह बात सुनने में तो बहुत बड़ी लगती है परन्तु, इसमें कोई सार नहीं है । यह तो एक Cheap Opinion (सस्ता मत) है । केवल पुरानी होने के कारण से भी कोई वस्तु या पदार्थ अनुपयोगी या बेकार नहीं हो जाता । विज्ञान बताता है कि सूर्य पृथ्वी से भी पुराना है । जल के बिना क्या कोई जी सकता है ? पवन के बिना संसार क्षण भर भी नहीं चल सकता । ये सब तो बैलगाड़ी के युग से भी पुराने हैं ।

विज्ञान के नियम क्या घिस गये ?:–

सृष्टि के जिन नियमों को वैज्ञानिक Eternal और Universal नित्य, अनादि व सार्वभौमिक मानते व बताते हैं, वे आज तक नहीं घिसे । ये नियम सदा से हैं । बैलगाड़ी के युग से भी पुराने हैं परन्तु इनका कोई Substitute स्थान लेने वाला नया नियम नहीं बन सका, न कभी बन सकेगा। इनके बिना विश्व नहीं चल सकता । इसी प्रकार प्राचीनतम अनादि वेद ज्ञान से ही विश्व-कल्याण सम्भव है ।

आज संसार में ईसाई व मुसलमानी मत के मानने

वालों की संख्या भी करोड़ों में हैं । हम पीछे संकेत दे चुके हैं कि इन मतों के ग्रन्थ भी इस सत्य की साक्षी देते हैं कि परमात्मा ने सृष्टि के आदि में मानव को अपना ज्ञान प्रदान किया और कभी सारे विश्व में एक ही धर्म व एक ही भाषा थी । वह एक धर्म कौन सा था ?

कभी वेद ही सारे संसार का धर्म था :–

जब और कोई मत था ही नहीं, तो जो धर्म ग्रन्थ तब था, वही सारे विश्व का धर्म था । वेद प्राचीनतम हैं, इसी से सिद्ध होता है कि सारा संसार कभी वेदानुयायी था। बाइबल में आता है ।

"In ths beginning was the Word."?[१]

अर्थात् सृष्टि के आदि में प्रभु का शब्द था । स्मरण रहे कि भारत में तो वेद के प्रमाण को शब्द प्रमाण ही कहा जाता है । बाइबल की इस आयत में Word शब्द तीन बार आया है और तीनों बार W Capital (बड़ा अक्षर) है । इससे सिद्ध है कि यह व्यक्तिवाचक संज्ञा है । बाइबल ही साक्षी देता है कि कभी विश्व की एक ही भाषा थी ।

"And the whole earth was of one language and of one speech" ?[२]

अर्थात् सारे विश्व की एक ही भाषा थी, एक ही वाणी का सर्वत्र व्यवहार था ।

कुरान को मानने वाले कुरान की भले ही नहीं मानते परन्तु कुरान भी पुकार–पुकार कर कह रहा है:–"पहले

---

१. द्रष्टव्य New Testament, John 1, Verse 1

२. द्रष्टव्य Old Testament. Genesis II, Verse 1

तो (सब) लोगों का एक ही मजहब था ।"[१] सृष्टि का एक ही धर्म था । यह प्रमाण कुरान के एक प्रामणिक भाष्य का हमने दिया है ।

मौलाना सैयद मन्सूर अहमद आगा जी **"वैदिक धर्म और इस्लाम"** पुस्तक के प्राक्कथन में लिखते हैं, **"वैदिक धर्म का आविर्भाव तथा वेदों की विद्यमानता इतिहास-पूर्व युग की घटनायें हैं ।"** माननीय मौलाना जी स्पष्ट शब्दों में वेदों को प्राचीनतम ज्ञान ग्रन्थ मानते हैं । इसी पुस्तक के लेखक सैयद अखलाक हुसैन ज़ी ने अपनी इस कृति के प्रथम पैरा में ही यह लिखा है कि 'वेद' शब्द ही इन्हें ईश्वरीय-वाणी सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है । आप वेद को मानवीय प्रयास व कल्पना का परिणाम न मानकर ईश्वरकृत ही स्वीकार करते हैं ।

अपने कथन की पुष्टि में आपने अल्बेरूनी का प्रमाण दिया है, **"वेद का अर्थ है जिसका ज्ञान न हो उसे जानना । हिन्दुओं की मान्यता है कि वेद प्रभु प्रदत्त ज्ञान है जो ब्रह्म (परमात्मा) की वाणी से निकलता है……वेद में विधि व निषेध का ज्ञान है । हिन्दू वेद को लिपिबद्ध करना उचित नहीं मानते । इसका कारण यह है कि वेद-पाठ स्वर व संगीत के साथ किया जाता है । लेखनी संगीत (लय) को व्यक्त करने में अक्षम है। वैसे भी लिखने में कुछ न्यून आधिक्य घटत-बढ़त) हो जाती है ।"**

---

१. द्रष्टव्य कुरान का भाष्य 'फतह-उल-हमीद' मनजिल एक पृष्ठ ५५

हम अल्बेरूनी के इस कथन पर कोई टिप्पणी करना नहीं चाहते ।

इसके साथ ही लेखक ने अठारहवीं शताब्दी के एक मुस्लिम विद्वान् मिर्ज़ा जाने जान मज़हर शहीद जी की एक फ़ारसी कृति से एक प्रमाण दिया है । इसका अनुवाद यहां दिया जाता है:– **"भारतीयों के प्राचीन ग्रन्थों से यह ज्ञात होता है कि मानव की उत्पत्ति के आदि में मानव जीवन के सुधार के लिए और मानवीय जीवन के व्यवहार व कल्याण के लिए परम देव परमेश्वर ने अपनी करुणा का प्रकाश करते हुए वेद नाम के ग्रन्थ प्रदान किये । ये संख्या में चार हैं । इनमें विधि व निषेध का ज्ञान है ।"** इन दोनों मुस्लिम विद्वानों में इस बात पर मतैक्य है कि वेद का ज्ञान सृष्टि के आदि में परमेश्वर द्वारा प्राप्त हुआ ।

कुरान के एक भाष्यकार मौलाना सना उल्ला जी अमृतसरी ने भी अपनी **"तफ़सीरे सनाई"** में **वेदों को ईश्वर की वाणी** स्वीकार किया है । कुरान के एक और भाष्यकार खाज़ा हसन निज़ामी भी एक जाने माने मुस्लिम विद्वान् व लेखक हुए हैं । आपने अपनी **"कृष्ण कथा"** कृति में **वेदों को परमात्मा की देन** बताया है ।

मुसलमान अब कादियानी मिर्ज़ाइयों को काफ़िर घोषित करके इस्लाम से बहिष्कृत कर चुके हैं । इस मत के संस्थापक ने कभी एक गन्दी कविता में यह लिखा था:–

"नास्तिक मत के वेद हैं हामी ।"

इसी मिर्ज़ा ने मरते समय अपनी पोथी **'पैग़ामे सुलह'** में लिखा कि **हम परमात्मा से डर कर वेद को ईश्वरीय**

वाणी मानते हैं ।

मुम्बई के एक पारसी विद्वान् ने अपनी एक खोजपूर्ण कृति Philosophy of Zorastrianism and Comparative Study of Religions नामक पुस्तक में वेद विषय में लिखा है:—"The Veda is a book of knowledge and wisdom comprising the book of nature, the book of religion, the book of prayers the book of morals and so on. The word Veda means wit, wisdom, knowledge, and truly the Vedas is condensed wit, wisdom and knowledge."

अर्थात् वेद ज्ञान की पुस्तक है जिसमें प्रकृति, धर्म प्रार्थना, सदाचार इत्यादि विषयक पुस्तकें सम्मिलित हैं । वेद का अर्थ ज्ञान है और वास्तव में वेद सारे ज्ञान विज्ञान का तत्त्व है । यह पुस्तक Times of India मुम्बई से १९४२ में प्रकाशित हुई थी । हमारे द्वारा सम्पादित पुस्तक वैदिक सुरभि ग्रन्थ में श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड के लेख में इस पुस्तक का यह प्रमाण दिया गया है ।

दादा चालजी नामी इस विद्वान् लेखक ने अपनी पुस्तक के इसी पृष्ठ संख्या १०० पर ऋग्वेद के प्रथम सूक्त का अनुवाद देकर लिखा है, "Thus we see that Agni in the hymns means both fire as well as God." अर्थात् इस प्रकार हम देखते हैं कि यहां अग्नि शब्द का अर्थ भौतिक अग्नि व परमेश्वर, ये दोनों ही हैं । विद्वान् लेखक ने आगे चलकर यह लिखा है कि "The Vedas teach nothing but monotheism of the purest kind." अर्थात् वेद तो केवल शुद्ध ऐसे एकेश्वरवाद की शिक्षा देता है जा पवित्रतम है ।

लाहौर से १९४५ में शेख मुहम्मद अशरफ जी की पुस्तक God, Soul And Universe in Science and Islam प्रकाशित

हुई थी । इसमें आपने लिखा, "Originally the conception of God among the Hindus was right when they believed Him to be Unit and Omnipresent but when they started dividing Him into different shape according to different functions which they considered He performed. They strayed far from their original Conception. The result was that many who were heroes in their life time, were gradually turned into incarnation of God and idolatery increased. Many Hindus believe that all their sins are washed away by having a dip in the holy water of the Ganges, Thus it is seen that the great philosophical religion which conceived unity of God in the beginning brought in corruption and degradation of high ideas, when His attributes as the creator, the preserver and the destroyer were divided and alloted to different deities possessing separate entities in different forms.

इसका भाव यह है कि आरम्भ में हिन्दुओं का ईश्वर विषयक दृष्टिकोण ठीक था । वह प्रभु को सर्वव्यापक मानते थे बाद में उन्होंने ईवर के भिन्न-भिन्न कार्यों को भिन्न भिन्न देवताओं या अवतारों में बांट दिया । परिणाम स्वरूप जो भी व्यक्ति अपने जीवन काल में शूरवीर रहे उन्हें अवतार माना जाने लगा । गंगा में डुबकी लगाकर पाप धोने की धारणा हिन्दुओं में पैदा हो गई । इस प्रकार हम देखते हैं कि एक प्रभु की सत्ता में विश्वास रखने वाला महान् दार्शनिक धर्म पतनोन्मुख हो गया । इसकी आस्था विश्वास विकृत व दूषित होते गये । ईश्वर के तीनों मुख्य गुणों जगत् के कर्त्ता, धर्त्ता व संहर्त्ता को भिन्न-भिन्न आकृतियों व देवों में विभक्त कर दिया गया ।

लेखक ने जो कुछ लिखा है सत्य है। वैदिक धर्म से विमुख होकर हिन्दू समाज ने जल, वायु, अग्नि, वर्षा,

विद्या के अधिपति के रूप में अलग-अलग भगवानों की कल्पना कर ली । मानों यह जगत् एक परमात्मा के वश में नहीं, इसका रचयिता एक नहीं, अनेक भगवान् इस संसार का संचालन कर रहे हैं । इससे बढ़कर हास्सयास्पद बात और क्या हो सकती है । वेद तो स्पष्ट रूप से जगत् का एक ही संचालक मानता है । **'पतिरेक आसीत्'**[१] यह वेद का घोष है कि इस विश्व का एक ही स्वामी है । वेद में फिर कहा गया है कि **'विश्वस्यमिषतोवशी'**[२] यह समस्त संसार उस एक ही परमपिता के वश में है । न्यारे-न्यारे भगवान् जगत् के भिन्न-भिन्न कार्य नहीं कर रहे ।

भारतीय मत पंथ तो सब वैदिक धर्म को किसी न किसी रूप में मानते ही हैं । श्री गुरु नानक देव जी का एक विख्यात वचन है:-

दीवा बले अन्धेरा जाई ।
वेद पाठ मति पापां खाई ॥

गुरुवाणी में वेद पाठ को मुख्य माना गया है । श्री गुरु अर्जुनदेव जी लिखते हैं-

वेद बखिआन करत साधुजन ।
भाग हीन समझत नहीं खल ॥

अर्थात् परोपकारी विद्वान् साधु महात्मा वेदोपदेश दे रहे हैं । भाग्यहीन मूर्ख उनके व्याख्यान को, कथन को समझ ही नहीं रहे । श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने जो कहा व लिखा है, वह भी सुन लीजिये:-

---

१. ऋग्वेद १०-१२२-२
२. ऋग्वेद १०-१९०-२

पढ़े सामवेदं जजुर वेद कथं ।
रिग वेद पठियं भाव हथं ।
अथर्व वेद पठियं सुणे पाप नठियं ।[१]

यहां अन्तिम पंक्ति में श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने श्री गुरु नानक देव जी की बात ही दोहराई है । ऊपर श्री गुरु नानक जी का शब्द हम दे चुके हैं वेद ज्ञान के श्रवण से और उस पर आचरण से पापलीन मलिन मति भी निर्मल हो जाती है । यही बात यहां गुरु गोविन्द सिंह जी ने लिखी है कि अथर्ववेद के पाठ से और श्रवण मनन से पाप दूर भाग जाते हैं । गुरुजी ने अपने इस वचन में चारों वेदों की महिमा बताई है । चारों वेद सच्चे हैं, प्रभु की ओंकार की वाणी हैं, यह गुरुवाणी बताती, सुनाती हैं । गुरुग्रन्थ की इस घेषणा का आदर करके ही मानव पाप-ताप से मुक्ति पा सकता है । वेद की महिमा में बहुत कुछ लिखा जा सकता है परन्तु अब हम पूर्वी विद्वानों के प्रमाण न देकर कुछ पश्चिमी लेखकों के विचार आगे देंगे ।

न मिलावट और न हटावट:-

वेद-अध्ययन में रुचि लेने वाले सज्जनों तथा सत्य को जानने की इच्छा रखने वाले सब ज्ञान पिपासु जिज्ञासुओं को पुनः बल पूर्वक हम यह बताना चाहेंगे कि जैसे सौर मण्डल में प्रकाश पुञ्ज सूर्य के प्रकाश में आज तक किसी प्रकार की मिलावट नहीं हो सकी इसी प्रकार परमेश्वर प्रदत ज्ञान-भानु वेद में भी कतई किसी प्रकार की मिलावट नहीं की जा सकी । धूर्त व स्वार्थी लोगों ने अपने स्वार्थ

---

१. देखिये विचित्र नाटक अध्याय चार ।

के लिए व अपने स्वामी राजाओं की दुर्बलताओं को धर्मानुकूल ठहराने के लिए अनेक धर्म ग्रन्थों में मिलावट कर दी। न रामायण बच सकी और न ही महाभारत बच पाई। ब्राह्मण ग्रन्थों व मनुस्मृति में भी प्रक्षेप करके इन्हें दूषित किया गया परन्तु वेद में न कुछ मिलाया जा सका और न कुछ हटाया जा सका।

प्रो० मैक्सकूलर ने भी इस सत्य को खुले हृदय से स्वीकार करते हुए यह लिखा है:—"The textes of the Vedas have been handed down to us with such accuracy that there is hardly a various reading in the proper sense of the word, or even an uncertain accent in the words of the Rigveda."[१] अर्थात् वेद संहितायें हमें ऐसी शुद्ध रीति से प्राप्त हुई हैं कि इनमें कहीं भी पाठ भेद नहीं मिला। सम्पूर्ण ऋग्वेद में एक भी अक्षर का भेद नहीं मिला।

एक पश्चिमी विद्वान् श्री डब्ल्यू डी० ब्रऊन ने बड़े सारगर्भित शब्दों में वेद क्या है और वेद में क्या है ? पर प्रकाश डालते हुए यह लिखा है:—"The Vedic religion recognises but one God. It is a thoroughly scientific religion where religion and science meet hand in hand. Here theology is based upon acience and philosophy." अर्थात् वैदिक धर्म केवल एकेश्वरवाद को मानता है। यह पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है जिसमें धर्म और विज्ञान हाथ मिलाकर (साथ-साथ) चलते हैं। वैदिक सिद्धान्त विज्ञान व दर्शन पर आधारित हैं।

थिली ने दर्शन के इतिहास में यह लिखा है, "प्राचीन जातियों में से किसी ने भी देवमाला की श्रेणी से

---

१. देखिये Origin of Religion Page 131

पग आगे नहीं बढ़ाया और सम्भवतः यूनान वालों को छोड़कर किसी अन्य जाति ने वास्तविक दर्शन शास्त्र को जन्म नहीं दिया।" परन्तु, यह एक भ्रान्त विचार है। दर्शन शास्त्र पर लिखते हुए एक दार्शनिक ने यह लिखा है कि पश्चिम में देवगाथाओं से दर्शन का जन्म हुआ है। यह ठीक ही है परन्तु भारत में तो पौराणिक साहित्य (देव गाथाओं) का जन्म दार्शनिक साहित्य की चिता पर हुआ है। सुप्रसिद्ध वैदिक दार्शनिक श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय जी ने ठीक ही लिखा है, "यूनान के दर्शन-शास्त्र की जननी वहां की देवमाला है। परन्तु भारतीय देवमाला दर्शन की चिता पर उपजी है और जब जब भारतीय दर्शन ने पुनर्जन्म ग्रहण किया तब तब देवमाला का ह्रास होता गया।"

अमरीका के प्रसिद्ध विचारक थौरो ने वेद विषय में अपने उद्गार विचार व्यक्त करते हुए यह लिखा है:—"What extracts from the Vedas I have read, fall on me like the light of the higher and purer luminary which describes a loftier course through a purer stratum free from particulars simple, universal, the Vedas contain a sensible account of God." अर्थात् वेदों की विचारधारा श्रेष्ठतम है। वेदों में प्रकाश है, विज्ञान है। वेद सार्वजनिक, सार्वकालिक व सार्वभौमिक है। वेदों में ईश्वर का समीचीन, तर्क संगत वर्णन है।

वेदों पर बहुदेवतावाद व प्रकृति पूजा का दोष लगाया जाता रहा है। यह दुष्प्रचार अंग्रेजी शासनकाल में बड़े योजनाबद्ध ढंग से किया गया। देश के स्वतन्त्र होने पर भी विदेशी इतिहास लेखकों के इस मत का खूब प्रचार

किया गया । इस दुष्प्रचार का आधार पुराण ही थे । यह तथ्य जानने का यत्न ही न किया गया कि पुराणों की रचना तो वेदों उपनिषदों व दर्शनों के प्रचार के ह्रास के बहुत पीछे हुई ।

मैकडानल ने यह ढोल पीटा कि ऋग्वेद के आठ मण्डल तो पहले के हैं और अन्त के दो मण्डलों की रचना पीछे जा कर हुई । ऐसे लोगों को भी यह जानकर निराशा हुई कि ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के १६४ वें सूक्त के ४६ वें मन्त्र में बड़े स्पष्ट शब्दों में एकेश्वरवाद की घोषणा की गई है । आज सारा संसार वेद की इस सूक्ति **'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति'** को जानता, मानता व नमन करता है । इसी मन्त्र में इन्द्र, मित्र आदि परमात्मा के नाम बताये गये हैं । वेद में एक से अधिक बार आता है कि वही रुद्र है, वही मित्र है और वही वरुण है । अन्त के दो मण्डलों में एकश्वरवाद के पीछे का बौद्धिक विकास सिद्ध करने के लिए ही मैकडानल आदि ने यह गप्प घड़ी परन्तु ऋग्वेद के प्रथम मण्डल ने इस धारणा को धवस्त कर के रख दिया ।

अर्थवेद में आता है कि परमात्मा एक है, एक है और एक ही है । **प्रभु दो नहीं, तीन नहीं, चार नहीं, पांच नहीं, छः नहीं, सात नहीं, आठ नहीं, और नौ नहीं । प्रभु अमिश्रित है ।**

यह भी स्मरण रहे कि कुरान व बाइबल में ईश्वर के गुणवाचक जितने भी नाम हैं, वे कोई नये नहीं है । कुरान में ईश्वर के कुल ९९ नाम आये हैं यथा दयालु, कृपालु, न्यायकारी स्रष्टा, पालक आदि । ये सब

नाम पहले भी आर्य जाति को ज्ञात थे । वैदिक साहित्य में प्रभु को न्यायकारी, सुकृत, दयालु, पिता, माता, स्त्रष्टा, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वाधार कहा गया है । अतः वेद पर बहुदेवतावाद का दोष तो केवल साम्राज्यवादी हितों की रक्षा के लिए लगाया गया । यह भारतीयों को धर्मच्युत करने की एक कुचाल थी । मैक्समूलर जैसे सरकारी वेतन भोगी स्कालर को भी यह स्वीकार करना पड़ा :–

"There are hymns which assert the unity of the Divine as fearlessly as any passage of the Old Testament or the Koran. Thus the poet says - That which is one sages name it in various ways - they call it Agni, Yama, Matarishva etc."[१]

मैक्समूलर को उपरोक्त शब्दों में वेद में एकेश्वरवाद का सिद्धांत स्वीकार करना पड़ा एकेश्वरवाद वेद की ही देन है । यह कुरान व बाइबल की कोई नवीन खोज या देन नहीं है । इसी को कहते हैं जादू वह जो सिर पर चढ़ कर बोले । **वेद में एक से अधिक बार परमात्मा के लिए 'एक' शब्द का प्रयोग किया गया है ।**

वेद पर एक शंका

वेद का अध्ययन किये बिना ही कुछ व्यक्ति बिना सोचे विचारे झट से यह कह देते हैं कि आज संसार में विज्ञान का युग है । कम्प्यूटर का युग आ गया है । अति प्रारचीन अनादि कहे जाने वाले वेदों को आज के युग के लिए कल्याणकारी कैसे मान लिया जाय ? इस परिवर्तनशील संसार में रहन सहन, खान पान व लोक व्यवहार के सब नियम

---

१. देखिये India What Can It Teach us.

बदल गये फिर वेद का ज्ञान आज क्या महत्त्व रखता है ?

यह बात सुनने में तो बहुत प्रभावशाली लगती है परन्तु है यह CHEAP OPINION सस्ता मत । ऐसी शंका करने वालों से तनिक पूछिये कि संसर में किस के नियम बदले ? किसका विधान बदला ? किसका ज्ञान बदला ? मानवीय नियम तो बदलते रहते हैं । मानवीय शासकों के विधान बदलते हैं । मानव का ज्ञान बदलता है । मानव की रचना व कला बदलती है । मानव की कारीगरी में सुधार व बिगाड़ होता है । संसद भवनों में राज नियमों में संशोधन होते रहते हैं । Inventions (आविष्कारों) में भी सुधार सम्भव है । साईकल का, गाड़ी का, वायुयान, जलयान, मकान व घड़ी का माडल तो बदलता रहता है । कारण ? ये सब मनुष्य निर्मित हैं । अल्यज्ञ जीव की कृति दोषयुक्त हो सकती है । अतः भाषण शैली, लेखन शैली, कविता शैली व कार्य शैली में सुधार सम्भव है। कारण ? जीव की अल्पज्ञता ।

सब योनियों के सब माडल पुरानेः–

सृष्टि-नियम आज तक एक भी नहीं बदला, न बदल सकता है और न बदलेगा । कारण ये सब नियम सर्वज्ञ प्रभु के बनाय हैं । परमात्मा की किसी भी कृति का माडल आज तक नहीं बदला । मनुष्य, पशु, पक्षी, पेड़-पौधे सब जैसे पूर्व काल में रचे गये, घड़े जाते रहे, आज भी वैसे ही बन रहे हैं । किसी भी योनि की रचना में लेश मात्र भी परिवर्तन नहीं हुआ । कान से सुनना, नाक से सूंघना, मुख से खाना व पैरों से चलना मुंह से बोलना, सब कुछ पहले जैसा ही है ।

सूर्य का कट नहीं, बिजली का कट लगता है:–

सूर्य, चन्द्र, व जल, वायु तथा अग्नि सब के नियम आज भी वही हैं जो सृष्टि के आदि में थे । हमारी मोटर गाड़ी तो वर्कशाप में जाती रहती है । परन्तु परमात्मा का सूर्य, चांद कभी भी वर्कशाप में नहीं भेजा जाता । हमारी बिजली फेल भी होती है और कट भी लगता है परन्तु परमात्मा के सूर्य व चन्द्र के प्रकाश का कट लगते नहीं देखा गया । **विज्ञान के नियम Discover खोजे तो जाते हैं परन्तु, बनाय नहीं जाते** । ये नियम पहले भी थे, अब भी हैं और आगे भी रहेंगे । तभी तो एक स्वर में इन्हें सब वैज्ञानिक (आज के भी और पहले के भी) नित्य व सार्वभौमिक (Eternal, Universal) मानते हैं ।

आप एक भी ऐसा उदाहरण नहीं दे सकते जिससे यह पता चले कि अमुक वैज्ञानिक नियम दोषयुक्त था सो बदल गया है या उसमें सुधार हुआ है । परमात्मा पूर्ण (Perfect) है । उसकी पूर्णत का यही प्रमाण है कि उसकी रचना निर्दोष है । प्रत्येक कृति अपने आप में दोष रहित है। जगत् में दोष या अपूर्णता जीवों की कृति में ही मिलेगी । भूगोल शास्त्र के, खगोल शास्त्र के, रासायण शास्त्र के, गणित के व पदार्थ विद्या के सब नियम जैसे पहले सत्य थे आज भी सत्य हैं ।

ईश्वरीय नियम नहीं घिसते:–

जब भौतिक जगत् के सब ईश्वरीय नियम पूर्ववत् सत्य हैं निर्दोष हैं और कल्याणकारी हैं । जब से सृष्टि की उत्पत्ति हुई ये नियम तभी से काम कर रहे हैं । फिर मानव कल्याण के, आत्मोन्नति के, विश्व शान्ति के, लोक व

परलोक के सुधार के, परिवार व समाज की उन्नति के ईश्वरीय नियम जो वेद के रूप में सृष्टि के आदि में परमात्मा ने दिये, वे कैसे बदल सकते हैं ? ईश्वरीय नियम कभी भी घिसते नहीं न जर्जर होते हैं ।

कोई नया कल्याणकारी नियम घड़ा ?:-

विश्व-कल्याण का एक भी नियम नया नहीं । संसार में बहुत उन्नति हुई है । यह हम भी मानते हैं, परन्तु याद रखिये ईश्वरीय नियमों को तोड़ने के कारण अवनति भी तो स्पष्ट देखी जा सकती है । पेड़, पर्वत, नदियां, अन्धाधुन्ध काट-काट कर मनुष्य ने ईश्वरीय नियमों को चुनौती देकर देख लिया । प्राणियों का संहार करके वायुमण्डल चीत्कारों से भर दिया । सारा संसार शोकाकुल है । क्या उन्नति हुई ? अब पुनः मनुष्य को पेड़ों की पर्वतों की नदियों व मूक प्राणियों की रक्षा की चिन्ता सताने लगी है । बहुत उन्नति करने पर भी संसार के बड़े-बड़े विचारक, नेता, वैज्ञानिक व बुद्धिजीवी विश्व-कल्याण के लिए, परिवार समाज व व्यक्ति के लिए एक भी ऐसा नया नियम नहीं बना सकें, न बता सके जिसका वेदों में वर्णन न हो । पुराण, बाइबल व कुरान की दुहाई देने वाले भी जगत् के लिये हितकारी कोई नवीन शिक्षा नहीं दे सके । विश्व-कल्याण के लिए जो-जो सीख आज संसार को दी जाती है । उसमें कुछ भी तो नया नहीं है । पुरुषार्थ, परमार्थ, धीरता, वीरता, सहनशीलता, प्रेम, संयम दान दया, उदारता, सत्यभाषण, प्रातः जागरण, आत्म-संयम, उपकार, सद्व्यवहार, शुद्ध वायु का सेवन, अन्न, जल की शुद्धि, जियो और जीने दो, इनमें से क्या नवीन

है ? और क्या प्राचीन नहीं है ? घृणा व द्वेष से बचने के उपदेश आज भी उतने ही सार्थक हैं जितने पहले थे । कृपणता व शोषण पहले भी घृणित कर्म थे और आज भी निन्दनीय हैं । परोपकार पहले भी प्रशंसनीय था और आज भी इसका महत्व है । मनुष्य की वृत्तियां नहीं बदलीं, वही हैं जो पहले थीं । इस कारण मनुष्य के सुधार के उपकार के नियम भी वही रहेंगे जो सृष्टि के आरम्भ में विधाता ने बनाय व बताय । यह नियम अटल हैं अटल ही रहेंगे । कोई भी ईश्वरीय नियम आज तक निरस्त नहीं हुआ ।

सत्य की खोज करने वाले व सत्य से प्रेम करने वाले विचारशील पाठकों से एक निवेदन करके हम आगे बढ़ेंगे जब अंग्रेजी भाषा के कवि वर्डसवर्थ, शैले अथवा अन्य कोई सागर का, उषा का, फूलों का, प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करता है तो ऐसे कवि को प्रकृति का (Nature) कवि कहकर उसकी प्रशंसा के पुल बांधे जाते हैं **परन्तु जब वेद के किसी सूक्त में उषा का, सिंधु का, मेघ का, वर्षा का, बनों का, नदियों का, वायु का, चन्द्र का, सूर्य का वर्णन आता है तो वैदिक आर्यों पर ईश्वरेतर पूजा का दोष लगाया जाता है । यह दोहरा मापदण्ड अशोभनीय ही नहीं निन्दनीय है ।**

वेद विषयक एक विचित्र विचार

एक बार बरेली में मुसलमान भाईयों का उत्सव था। शास्त्रार्थ के लिए श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी वहां आमन्त्रित थे । मुसलमान तौरेत, ज़बूर, इंजील आदि को भी आसमानी पुस्तकें (ईश्वरीय ज्ञान) मानते हैं परन्तु इन्हें अब निरस्त माना जाता है । पण्डित जी ने प्रतिपक्षी मौलाना से

स्वामी दर्शनानन्द जी का एक प्रश्न पूछ लिया । पण्डित जी ने कहा, "अल्लाह तौरेत में क्या भूल गया था कि इंजील उतारी गई और फिर कुरान की बारी आ गई । अब आगे क्या होगा ? क्या आयगा ? यदि कुरान में भी कोई कमी रह गई हो तो ?"

मौलाना उत्तर देने के लिए मुस्कराते हुए उठे और कहा, "लगता है कि पण्डित जी को कभी किसी वैद्य हकीम से पाला नहीं पड़ा । हकीम लोग पेट के रोगी को पहले आमाशय नरम करने के लिए कोई औषधि देते हैं । जब आमाशय नरम हो जाता है तो फिर पेट से मल निकालने के लिए कोई जुलाब दिया जाता है ।

ठीक इसी प्रकार अल्लाह ने पूर्व काल के मनुष्यों में सत्य के व एकेश्वरवाद के विरुद्ध जितना मल था उसे नरम करने के लिए कुरान से पूर्व की ये किताबें उतारीं और अन्त में कुरान मजीद नाज़िल (उतारकर) करके सारा मल कतई निकाल दिया ।" सुनने में मौलाना का उत्तर भी बड़ा बेजोड़ लगता है ।

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने इस पर मौलाना महोदय से कहा, "मौलाना अल्लाह का इलाज भी बड़ा विचित्र है । जिन लोगों का तौरेत, ज़बूर व इंजील देकर आमाशय नरम किया गया उन्हें कुरान रूपी जुलाब नहीं दिया गया और आज जिन्हें यह जुलाब दिया जा रहा है उनका आमाशय नरम नहीं किया गया । **पेट में गड़बड़ एक को हो, आमाशय नरम दूसरे का कर दिया और जुलाब तीसरे को दिया गया ।"**

इस्लाम जीव को अनादि नहीं मानता । पुनर्जन्म को

भी कठमुल्ला लोग कुफ्र बताते हैं । अपवाद रूप में कुछ मुस्लिम विद्वान जीव व प्रकृति को अनादि मानते हैं । पुनर्जन्म का सिद्धांत भी मानते हैं परन्तु प्रचलित इस्लाम के अनुसार जिनके लिए तौरेत उतारी गई वे जीव ज़बूर के काल में नहीं थे इंजील पाने वाले जीव भी नये पैदा किये गये और कुरान जिनके लिए उतार गया इनकी उत्पत्ति भी नई है । पहले ये भी नहीं थे ।

इस्लाम ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव नित्य मानता है । न जाने नित्य ईश्वर के नित्य ज्ञान का अवमूल्यन करने के लिए ऐसी-ऐसी युक्तियां घड़ने से लोगों को क्या लाभ होता है । इससे ईश्वर का गौरव घटता है और कुरान भी महिमा मण्डित नहीं होता । सृष्टि के आदि में ही ज्ञान के आविर्भाव से सब समस्याओं का समाधान होता है ।

वेद में क्या है ?:—

कुछ लोगों पूछते हैं कि वेद में क्या है ? ऋषि उत्तर देते हैं कि वेद सारे धर्म का मूल है । मानव कल्याण के लिए प्रभु ने वेद में बीज रूप में सारा ज्ञान चार ऋषियों की ह्यदय गुहा में प्रकाशित कर दिया ।

सुख शान्ति व सृद्धि का एकमेव मार्गः—

सब प्राणी सुख चाहते हैं । कोई दुःख नहीं चाहता। मनुष्य तो सुख, समृद्धि चाहता ही है । सुख, समृद्धि व शान्ति का एक ही मार्ग है । दूसरा कोई मार्ग नहीं । यह मार्ग ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त में परमात्मा ने मानव को दिखाया है । यह सूक्त संगठन सूक्त के नाम से प्रसिद्ध है। इसका देश, काल व किसी वर्ग विशेष से कोई सम्बन्ध नहीं है । आज सारे संसार में युद्ध का भय व्याप्त है । इस

सूक्त के प्रथम मन्त्र में मनुष्य के लिए मानव हित में **"समानो मन्त्रा"** मिलकर विचार करने का उपदेश दिया गया है । इसके लिए **"समिति समानी"** का आदेश भी दिया गया । मिलकर विचार तभी होगा जब सब जातियों व देशों की एक समिति हो । सुख शान्ति व समृद्धि का जो उपाय इस मन्त्र में बताया गया है, इसे कौन झुठला सकता है ? आज मिलकर, आमने सामने बैठकर विचार करने से ही प्रत्येक समस्या का समाधान खोजने पर बल दिया जाता है ।

आगे **"संगच्छध्वं"** मिलकर चलने व मिलकर बोलने का–संवाद करने का उपदेश है । यह Walk together व Talk together ही आदर्श संसार का स्वरूप है । यह समान मन्त्र समान समिति का स्वाभाविक फल है । अगले एक मन्त्र में समान हृदय व समान मन की बात कही गई है । उपरोक्त जो निर्देश दिया गया है तदनुसार आचरण का सुखद परिणाम होगा, मन व हृदय की अनुकूलता तथा एक जैसी भावनायें ।

इस सूक्त में एक और मार्मिक शब्द आया है **"सुसहासति"** । इसका अर्थ है भली प्रकार से मिल जुल कर रहना । कभी भारत व चीन ने मिलकर पंचशील की घोषणा की थी । उसमें एक सिद्धान्त था सहअस्तित्व (Co-existence) । मिलकर रहना एक अच्छी बाता है परन्तु इस शब्द से भली प्रकार रहने का भाव नहीं निकलता । साथ–साथ रहने के लिए परस्पर सहयोग का आदेश इस सुसहासति शब्द में दिया गया है । जहां परस्पर सहयोग की भावना होगी वहीं सुख, समृद्धि व शान्ति होगी । भली

प्रकार से जीवन बिताने का यही एक मार्ग है ।

वैदिक प्रार्थनायें:–

मानव की सर्वांगीण उन्नति के लिए जो जो कुछ चाहिए, उसके लिए वेदों में बहुत सुन्दर प्रार्थनायें हैं । मनुष्य सब कुछ पाकर भी, सब कुछ लुटा देता है, गंवा देता है केवल बुद्धि के न होने से और कुछ न होने पर भी सब कुछ पा लेता है अपनी उत्तम बुद्धि से । वेद के प्रसिद्ध गायत्री महामन्त्र से गुरु विद्या आरम्भ करवाते आये हैं । इस मन्त्र में परमेश्वर से उत्तम निर्मल बुद्धि की कामना की गई है । ऐसी बुद्धि की याचना की गई है जो सत्कर्मों की ओर प्रेरित करे । संसार के किसी मत पंथ व ग्रन्थ में ऐसी प्रार्थना नहीं मिलेगी ।[१] यह वेद की विशेषता ही नहीं विलक्षणता है । अथर्ववेद के एक मन्त्र में यह कहा गया है कि बुद्धि तू मेरे लिए सर्वप्रथम है अर्थात् मेरी पहली प्राथमिकता है ।

वेद की भाषा:–

वेद की भाषा का अर्थ–गौरव व सौन्दर्य संसार में अपना उदाहरण आप ही है । वैसे तो संसार की प्रत्येक भाषा में एक शब्द के लिए अन्य अन्य पर्याय भी मिलते हैं । और ऐसे भी शब्द हैं जिनके एक से अधिक अर्थ निकलते हैं । फ़ारसी के महान् कवि शेख सादी का एक पद्य है:–

---

१. श्री अनवर शेख़ की पुस्तक Vedic Civilisation में इस मन्त्र की महिमा पढ़िये । इस मन्त्र में स्तुति, प्रार्थना व उपासना तीनों हैं । यह भी इसकी एक विशेषता है ।

सादिया दरीं दयार तू मर्दे मुसाफ़री ।
बा कस सुख़न न गोई कि गुजरातियां ज़नन्द ॥

पहली पंक्ति का अर्थ है ऐ सदी तू यहां यात्री है । दूसरी पंक्ति के दो अर्थ हैं । पहला यह कि तू किसी से बात न कर अन्यथा गुजराती पीट डालेंगे । दूसरा अर्थ यह है कि किसी से बात न कर कि गुजराती तो स्त्रियां हैं । परन्तु, वेद के शब्द यौगिक हैं । वेद में एक-एक शब्द के कई कई अर्थ व पर्याय होने से वैदिक मन्त्रों का अर्थ-गौरव, सौन्दर्य व गम्भीर्य अद्‌भुत है । इससे वेद मन्त्रों के गूढ़ भावों को देखकर व्यक्ति चकित हो जाता है । ऋग्वेद में आता है:-

सूर्यचन्द्रमसौ धाता यथापूर्व मकल्पयत् ।

अर्थात् परमात्मा ने जैसे इस सृष्टि में सूर्यचन्द्र को बनाया पहली सृष्टियों में भी ऐसे ही सूर्यचन्द्र की रचना करता रहा है । यहां यथापूर्व (Cyclic order प्रवाह से) सृष्टि रचने का सिद्धान्त तो रखा ही गया है । ईश्वर के नियमों की अटलता का सिद्धान्त भी प्रस्तुत किया गया है । अन्य मत पंथ ईश्वर के नियमों का टूटना, चमत्कारों का होना अपने मत व ग्रन्थ की महिमा का प्रमाण मानते रहे हैं । ऋग्वेद में ही अन्यत्र कहा गया है कि विधाता ने सृष्टि को नियमों से सजाया है । यह वेद की एक अनूठी देन है । मित्रो ! तनिक विचारें यदि जगत् नियमबद्ध न होता तो विज्ञान Science कहां टिकता ?

"Perhaps lawlessness would have gone more against the theistic conception than the existence of law." अर्थात् नियमबद्धता की बजाय अनियमितता आस्तिकता के अधिक विपरीत जाती है ।

जगत् में सर्वत्र व्यवस्था है और प्रत्येक वस्तु व पदार्थ का एवं क्रिया का कुछ प्रयोजन है । व्यवस्था से नियमों की महत्ता का पता चलता है वेद में बार-बार अटल व सत्य नियमों का गुणगान मिलता है । ये वेद की एक महान् देन है ।

ऊपर ऋग्वेद के मन्त्र में यथापूर्व के साथ ईश्वर के लिए धाता शब्द का प्रयोग किया गया है । इस शब्द में गागर में सागर भर दिया है । इसके लिए किसी भी भाषा में कोई शब्द नहीं है । धाता का अर्थ विधाता, Creator रचयिता तो है ही, इसका एक अर्थ धारण करने वाला भी है । ईश्वर जगत् की रचना, पालन व संहार करने वाला है । वह धारण करने के कारण ही ये तीनों कार्य कर सकता है । प्रभु सर्वव्यापक न हो तो न सृष्टि रच सके, न पालन कर सके, न इसे चला सके और न संहार कर सके । सृष्टि में पतिक्षण कुछ बनता है और कुछ बिगड़ता भी है ।

ईश्वर सर्वव्यापक है । वह धाता है तभी तो सहज रीति से ऐसा हो रहा है । ईश्वर सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान भी इसी कारण है । धाता होने से ही वह सर्वाधार है । पाठकवृन्द ! देखा ? वेद के एक ही शब्द में कितने गूढ़ परन्तु सहज रीति से समझ में आने वाले दार्शनिक भाव परमात्मा ने भर दिये हैं ।

यहां प्रसंगवश यह चर्चा कर दें कि अंग्रेज़ों के शासनकाल में इतिहास में व अन्य ग्रन्थों में भी वेद को 'गडरियों के गीत' कहने का एक फैशन चल पड़ा था । वेद के अवमूल्यन के लिए व हिन्दुओं को वेद से घृणा

दिलाने के लिए ही ये शब्द घड़े गये । यह ठीक है कि प्राणी जगत् से, वनस्पतियों से, सूर्य, चन्द्र, उषा व सागर की लहरों तक से प्यार करने वाले प्राचीन आर्य सब वेद मन्त्रों का गान करते थे । हमारे पशु पालक भी वेद ऋचायें गाते थे । **क्या पशु पालक ऋचाओं को गायेंगे तो इससे वेद ऋचाओं का गौरव घटेगा ?**

पशु प्रेमी महापुरुषः—

हज़रत मुहम्मद बिल्ली से भी प्यार करते थे । वह ऊंटों वाले कहे जाते हैं । हज़रत ईसा क्या भेड़ों वाले नहीं कहे जाते ? क्या वह पशुओं से प्यार नहीं करते थे ? हमारे योगेश्वर कृष्ण आदि सब महापुरुष गोपाल थे । श्री गुरु नानकदेव जी भैंसों को चराते थे । क्या इस कारण कुरान व बाइबल की आयतों को हीन भाव से देखा जाय ? क्या इस कारण गीता व गुरुवाणी की महिमा कम हो सकती है ? वेद को Primitive आदिम लोगों का काव्य कहने का क्या अर्थ ? वेद प्रत्येक युग के लिए है, ऐसे ही जैसे सृष्टि के अन्य नियम व विज्ञान प्रत्येक युग के लिए हैं । इसी प्रसंग में एक और बात पर यहां कुछ विचार करना आवश्यक है ।

जो मुसलमान भाई पूर्व काल की आसमानी किताबों (ईश्वरीय ज्ञान) का निरस्त होना मानते हैं वे यह कहते हैं कि अब अल्लाह ने कुरान की सुरक्षा की गारण्टी दी है और ज़िम्मेदारी भी ली है । अब कुरान में कुछ भी न घटेगा, न बढ़ेगा और न बदलेगा । प्रलय तक यही नियम (कुरान) चलेगा । इस प्रकार से सोचने वाले सज्जनों से हम पूछेंगे कि समय के साथ–साथ अल्लाह ही बदल गया

है या उसके गुण, कर्म, स्वभाव बदल गये हैं ? जब उसने पूर्व ग्रन्थों को निरस्त कर दिया और उनकी रक्षा न कर सका तो अब क्या गारण्टी है कि कुरान को भी एक दिन निरस्त नहीं कर देगा ?

रोगी संसार और वेदः—

आज संसार के विकासशील देश भी कैंसर, शूगर, हृदय रोग व रक्तचाप आदि रोगों से आतंकित हैं। अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त के २६ मन्त्रों में दस बार तप शब्द आया है। इसी सूक्त में श्रम, तप, मेखला व समिधा ये विद्यार्थी के चार भूषण बताय गये हैं। आज वैज्ञानिक एक स्वर से यह कह रहे हैं कि श्रम विहीन व तप रहित रहन सहन ही घातक रोगों का एक मुख्य कारण है। जिस अथर्ववेद को पश्चिमी लेखकों ने जादू टोने का ग्रन्थ बताकर तिरस्कृत किया उसमें तप व श्रम की ऐसी महिमा बताई गई है। तपस्वी व श्रमशील ही जीने का अधिकार रखते हैं। अथर्व शब्द का अर्थ है अकम्प Unshakable. **क्या आदिम मनुष्य (Primitive) किसी ग्रन्थ का ऐसा मार्मिक नामकरण कर सकता है ? कदापि नहीं। यह तो सर्वज्ञ प्रभु की ही देन है।**

वेद की प्रार्थना और पुरुषार्थ दर्शनः—

संसार के आस्तिक लोग ईश्वर से प्रार्थनायें करते आए हैं। प्रार्थना में ईश्वर से सब लोग कुछ न कुछ मांगते हैं। लोगों ने प्रार्थना का अर्थ ही प्रभु से कुछ मांगना समझ रखा है। वेदानुसार प्रार्थना प्रतिज्ञा का पर्याय है। अर्थात् प्रार्थना से पूर्व पुरुषार्थ का होना आवश्यक है। सहस्रों वर्षों के पश्चात् ऋषि दयानन्द एक ऐसे विचारक और

धर्माचार्य आए जिन्होंने पूजा का पुरुषार्थ से मेल करवाया। अन्यथा अन्धविश्वासी लोगों ने ईश्वर से कुछ भी मांगने को प्रार्थना की संज्ञा दे रखी है । परमात्मा से क्या मांगना चाहिए और क्या नहीं मांगना चाहिये, यह भक्त को जानना चाहिए ।

अथर्ववेद के एक प्रसिद्ध मन्त्र **'स्तुता मया वरदा वेदमाता'** में बड़े सुन्दर वैज्ञानिक ढंग से इस पर प्रकाश डाला गया है । ईश्वर से १. पुरुषार्थ, गति, ऊर्जा, २. आयु, ३. प्राण, ४. प्रजा (सन्तान), ५. पशु, ६. कीर्ति, ७. धन सम्पदा, ८. ब्रह्मवर्चस (Spiritual Vigour) और मोक्ष की कामना इस मन्त्र में की गई है ।

आप विचार करके देखिए । इससे परे मनुष्य को चाहिए भी क्या ? पाने को कुछ और है ही नहीं ।

यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में भी ईश्वर से ऊर्जा की प्रार्थना की गई है । कर्मण्यता पर बल वेद की मौलिकता व विशेषता है । संसार के लोग राम भरोसे कुछ न करने को आस्तिकता व भक्ति बताते हैं । लोग यह रट लगाते हैं:—

"अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम ।"

यह सत्य नहीं कि पंछी काम नहीं करता । आप चेतन संसार की तो बात ही छोड़िए । सम्पूर्ण जड़ जगत् भी गति करता है । तभी तो यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के प्रथम मन्त्र में संसार को जगत् कहा जाता है । सब ग्रह उपग्रह गति करते हैं । ईश्वर के अस्तित्व का सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि वह इसे गति देता है । प्रो० विष्णु दयाल जी ने ठीक ही तो लिखा है कि यदि जगत् शब्द बाइबल में आता तो गलीलियो को असह्य यातनायें सहनी न पड़तीं ।

अकर्मण्यता का पाठ पढ़ाने वालों को भी **'हिम्मते मर्दां मददे खुदा'** God helps those who help themselves. प्रभु उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं, यह मानना व जानना पड़ता है ।

वेद में कृषि व्यापार व उद्योग-धन्धे–

वेद में कृषि को प्रमुख व पवित्र धंधा बताया गया है । कृषक ईश्वर के सबसे बड़े नियम कर्म–फल सिद्धान्त पर अडिग विश्वास रखता है । जो बीजोगे सो काटोगे अतः जो करोगे सो भरोगे यह अटल नियम ईश्वर के विधान की जान है । कृषक का सम्पूर्ण कार्य व्यवहार इसी अटल नियम की व्याख्या ही तो है । इसी नियम के उल्लंघन से भ्रष्टाचार, घूस, Hoarding जमाखोरी व काला बाजार जैसे पाप कर्म होते हैं ।

वेद में **'मधुवाता ऋतायते'** आदि मन्त्रों में जल, वायु, नदियों के कल्याणकारी होने की कामना की गई है। वेद का शान्ति पाठ पढ़िये । धरती को स्वर्गधाम बनाने का प्रोग्राम दिया गया है । अन्तरिक्ष की खोज करने वाले वैज्ञानिकों को कहीं आसमान में तो स्वर्ग Heaven मिला नहीं। धरती पर ही स्वर्ग उतारने का प्रोग्राम व प्लान (योजना) वैदिक शान्ति पाठ में है । मानव मन में, पृथ्वी पर, आकाश में, अन्तरिक्ष में, द्यौलोक में, औषधियों, वनस्पतियों, सागर की लहरों, पर्वतों जल स्थल में सब ओर शान्ति का वास हो । एकांगी शान्ति से शान्ति सम्भव ही नहीं । ऐसी पूर्ण प्रार्थना और किस ग्रन्थ में है ? इस एक मन्त्र से तुलना करके कोई बताय तो ।

वेद में निवृत्ति और प्रवृत्ति दोनों का महत्व बताया

गया है । दोनों का समन्वय दर्शाया गया है । शरीर-निर्माण, जीवन-निर्माण, शिष्य, गुरु, राजा प्रजा, गृहस्थ, व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, विवेकशील, श्रमशील, डाक्टर वैद्य सब की उन्नति व कल्याण का विधान मिलता है । किस का क्या कर्त्तव्य हैं, यह वेदों में दिया गया है ।

जयकार वेद काः—

सृष्टि की रचना अभाव से नहीं हुई । अनादि जीवों के लिए अनादि प्रकृति से रचयिता ने यह जगत् रचा है । Matter can neither be created nor it man be destroyed. प्रकृति न तो उत्पन्न की जा सकती है और न ही नष्ट की जा सकती है । विज्ञान की यह घोषणा वैदिक धर्म का जयकार है, जयघोष है । **उपादान कारण के बिना सृष्टि की रचना की बात सृष्टि नियम सहन नहीं करता ।** पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय जी का यह कथन यथार्थ है ।

हम पुनः एक बार कहेंगे कि वेदों में कहीं भी जादू टोने, भूत, प्रेत, बहुदेवतावाद, सुरापान, मांसाहार का विधान नहीं । ये गप्पें वेद घात करने के लिए वेतनभोगी वेदभाष्यकारों ने घड़ी । ये भाष्यकार भारतीय अथवा अभरतीय शासकों के नौकर थे । शासकों को प्रसन्न करने के लिए, पापी पेट के लिए इन्होंने वेदों के आर्थ के नाम पर अनर्थ किया । ऋषि दयानन्द ने आजीवन किसी की नौकरी न की । उन्नीसवीं शताब्दी के कई धार्मिक नेता यथा सर सैयद अहमद खाँ, राजा राममोहनराय सरकार की नौकरी करते रहे । वह ऋषि ईश्वर का प्यारा था । उसने श्रद्धा से भरपूर हृदय के साथ अपने प्रीतम प्रभु प्यारे की अमर वेद वाणी के ठीक-ठीक अर्थ करके मानव मात्र का भारी उपकार

किया । उसके वेद भाष्य की यही विलक्षणता व विशेषता है कि उसने ईश्वर के दिशा निर्देश में वेद भाष्य किया। इस काम में उसका Guide मार्गदर्शक सर्वज्ञ प्रभु था । उस का कोई और Boss मालिक अथवा अन्नदाता नहीं था ।

वेद में क्या नहीं ?

इस पुस्तक की समाप्ति पर हम वेद में क्या नहीं है इसके सम्बन्ध में जाने माने मुसलमान् मौलाना डा० गुलाम जैलानी जी की पुस्तक **'एक इस्लाम'** का प्रमाण देना आवश्यक व उपयोगी समझते हैं । **"वेदों में मूर्ति पूजा का कहीं उल्लेख नहीं है । आदि से अन्त तक केवल एक परमात्मा की उपासना का आदेश दिया गया है । क्योंकि पण्डित (पौराणिक, ब्राह्मण) की मानसिकता बहुत बुरे ढंग से विकृत हो चुकी है । इसके लिए आदर व उपासना में कोई अन्तर नहीं रहा** अतः वह परमेश्वर व महात्मा गांधी दोनों के सामने नतमस्तक होकर गिर जाता है । **वह कृष्ण की मूर्ति व सम्राट अकबर के चरण चूमता है । उसे हिमालय पर प्रभु का सिंहासन दिखाई देता है ।"[१]** वह बिजलियों की कड़क और आँधियों के शोर में देवों की भयावह आवाज़ें सुनता है ।

उसे सर्प के फन और मयूर के नृत्य में ईश्वर झूमता हुआ दिखाई देता है और इस लिए वह पवित्र वेद के एक एक अक्षर में एक नया भगवान् खोजता है । समझ

---

१. और मुसलमानों को अल्लाह का सिंहासन सातवें आसमान पर दिखाई देता है ।

में नहीं आता कि केवल एक परमात्मा से ब्राह्मण की सन्तुष्टि क्यों नहीं होती ? जब वह जानता है कि ये सारी सृष्टि, ये सागर, पर्वत, ये कराड़ों सूर्य चन्द्र एक ही परमात्मा की रचना हैं । उस प्रभु की शक्तियों का अनुमान लगाना कठिन है । उसके पास समस्त प्रकार की देन के असंख्य भण्डार हैं । वायु वही चलाता है । वर्षा वही वर्षाता है । भूमि से अन्न धन वही उपजाता है ।

इसमें कतई कोई संशय नहीं कि **"वेद में ईश्वर के गुणवाचक नाम यथा ब्रह्मा (महान्) महादेव (बड़ा देव) विष्णु (रक्षक) इत्यादि और देवों (फरिशतों) का वर्णन है । परन्तु अनेक भगवानों का कहीं निशान तक नहीं मिलता ।"**[१]

यह ऋषि दयानन्द की कृपा का फल है कि इस्लाम के एक प्रख्यात प्रवक्ता व विद्वान् लेखक ने इस प्रकार वेद में एकेश्वरवाद व एक ईशोपासना के सिद्धान्त को खुले हृदय से स्वीकार किया है ।

इन्हीं डा० गुलाम जेलानी जी ने अपनी पुस्तक में आगे के तीन महत्वपूर्ण प्रमाण दिये हैं । मार्शमैन का कथन है:– **"वेदों का मुख्य सिद्धान्त एक ईश की उपासना है। इनमें ईश्वरेतर किसी और सत्ता की पूजा का उल्लेख नहीं। इसमें सन्देह नहीं यत्र तत्र देवों का वर्णन मिलता है परन्तु इनसे संसार की गुप्त शक्तियाँ अभिप्रेत हैं । खेद की बात है कि हिन्दु जाति वेद की शिक्षा से**

---

१. द्रष्टव्य 'एक इस्लाम' उर्दू पुस्तक लेखक डा० गुलाम जेलानी पृष्ठ १७४-१७५

बहुत दूर जा पड़ी है ।"[१]

एक अन्य लेखक कालब्रुक लिखते हैं:– **"वेदों में अनेक भगवानों की पूजा का कहीं वर्णन नहीं ।"**[२] प्रो० विलसन महोदय का कथन है, **"वेदों से प्रतिमा पूजन और उनका बनाना सिद्ध नहीं होता ।"**[३] कुछ पश्चिमी ईसाई लेखक ऋग्वेद को ईसा के दो हज़ार वर्ष पूर्व बताते रहे हैं, कोई वेद का रचना काल तीन सहस्त्र वर्ष पूर्व और कई ईसा से साढ़े तीन हज़ार वर्ष पहले का राग अलापते रहे। श्री पं० भगवद्दत जी कहा करते थे कि हमें इस पर बुरा नहीं मनाना चाहिए । ये लोग तो सृष्टि की आयु ही पांच छः हज़ार वर्ष की मानते हैं । यह तो इनकी हिम्मत है कि वेदों को ईसा से तीन साढ़े तीन हज़ार वर्ष पुराने ग्रन्थ मान लिया । ये सृष्टि को बने हुए पांच हज़ार वर्ष का मानते हैं । और हम सृष्टि को पांच हज़ार वर्ष से बिगड़ा हुआ मानते हैं । इनकी इस सोच का (कि वेद साढ़े पांच सहस्त्र वर्ष पुराने हैं) अभिप्राय भी तो यही है कि वेदों का आविर्भाव सृष्टि के आरम्भ में ही हुआ । हर्ष का विषय है कि अब वेदों में ये लोग जादू–टोने, भूत–प्रेत की बजाय ईसा व मुहम्मद आदि अपने महापुरुषों, नबियों को देखने लगे हैं ।

बिना विधान के न्याय व्यवस्था कैसे ?

यह तो सब पर स्पष्ट हो चुका है कि सृष्टि के

---

१. मार्शियन हिस्ट्री पृ० १
२. एशिया की ऐतिहासिक खोज पृष्ठ ३८५
३. आकसफोर्ड से प्रकाशित विलसन का भाषण पृष्ठ १४

नियम अटल हैं । परमात्मा के नियम घिसते, मिटते, बदलते, घटते व बढ़ते नहीं हैं । एक बात और विचारणीय है कि ईसाई व मुसलमान सब ईश्वर को न्यायकारी मानते हैं । वह प्रभु सदा से पाप व पुण्य का दुःख व सुखरूप में फल देता है । वह परमात्मा पहले भी न्याय देता था और आज भी । किसी नियम को तोड़ने व परमात्मा की आज्ञा का उल्लंघन करने पर ही तो दण्ड दिया जाता है । नियम, व्यवस्था व आदेश बताये बिना तो किसी को पापी बताकर दण्डित नहीं किया जा सकता । बाइबल व कुरान से पहले भी प्रभु न्याय देता था । दण्ड देता था । बिना अपना ज्ञान, विधान व व्यवस्था बताय ही क्या वह मनुष्यों को दण्ड देता रहा ? विधि विशेषज्ञ कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं मानेगा। इससे यही सिद्ध होता है कि परमात्मा के विधान वेद का सृष्टि के आदि में ही आविर्भाव हुआ । सृष्टि के आदि में ही यह व्यवस्था लागू की गई । विधान के लागू करने के पश्चात् ही किसी को दोषी ठहराया जा सकता है अन्यथा नहीं ।

□□□

तेरी जो अमृतवाणी

जीवन की नौका कर दो पार जग के सिरजनहारे ।
श्रद्धा की सुन्दर दो पतवार मेरे प्रीतम प्यारे ।।

मन से दुर्भाव भगा दो सोये सद्भाव जगा दो ।
सुखमय हो तेरा यह संसार जग के सिरजनहारे ।।

पढ़ते हैं ज्ञानी ध्यानी तेरी जो अमृतवाणी ।
चख लूँ मैं वेदों की रसधार जग के सिरजनहारे ।।

साहस व शक्ति देना भक्ति अनुरक्ति देना ।
धीरज का दे दो जी भण्डार जग के सिरजनहारे ।।

कष्टों में न घबराऊँ सुविधा में न इतराऊँ ।
आशा का नित्य करो सञ्चार जग के सिरजनहारे ।।

सन्ध्या दो काल करूँ मैं, पापों से सदा भिड़ूँ मैं ।
भूलों का करता रहूँ सुधार जग के सिरजनहारे ।।

परहित कुछ करना सीखूँ सत्पथ पर अड़ना सीखूँ ।
सुनिये यह मेरी विनय पुकार जग के सिरजनहारे ।।

आशा विश्वास देना मन में उल्लास देना ।
भर दो नस-नस में अमृतधार जग के सिरजनहारे ।
जीवन की नौका कर दो पार जग के सिरजनहारे ।।

—जिज्ञासु

हमारी आगामी योजनाएँ

हमें अपने प्रेमी पाठकों को अपनी आगामी साहित्यिक योजनाओं की जानकारी देते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है । अपने सामने अब दो ही कार्य मुख्य हैं–**ईशोपासना में विशेष समय देना** तथा **वैदिक विचारधारा के प्रचार प्रसार के लिए साहित्य सृजन व प्रकाशन** । अन्य किसी कार्य में हमें रुचि ही नहीं । जीवन की सार्थकता हम इसी में मानते हैं । जीवन के एक एक श्वास का उपयोग इसी लक्ष्य की पूर्ति में करेंगे ।

१. रक्तरंजित है कहानी भाग दूसरा शीघ्र पूरा करके छपने दे दिया जायेगा ।

२. शूरता की शान स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बृहत् जीवन-चरित तैयार हो रहा है ।

३. आर्य जाति के मूर्धन्य वैदिक विद्वानों व नेताओं के चुने हुए उर्दू लेखों का हिन्दी अनुवाद 'साहित्य-सरिता' नाम से तैयार करने में हम लग चुके हैं । इसमें हिन्दी में छपे कुछ लेख भी दिये जायेंगे । श्री महाशय कृष्ण जी, प्रो० महेशप्रसाद जी, पं० भीमसेन जी विद्यालङ्कार, महात्मा नारायण स्वामी जी, सन्त लक्ष्मण आर्योपदेशक, मेहता जैमिनि, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, महात्मा आनन्द स्वामी जी, डा० दीवानचन्द जी आदि पन्द्रह बीस महापुरुषों के लेख इसमें होंगे ।

४. 'गंगा-ज्ञानधारा'–गंगा-ज्ञानसागर के चार बृहत् ग्रन्थों के पश्चात् उपाध्याय जी के लेख व साहित्य अब

डिमाई आकार में आ रहे हैं । प्रथम भाग प्रेस में दिया जा चुका है ।

५. त्रैतवाद की पुष्टि व मायावाद के प्रतिवाद के लिए एक पुस्तिका पर काम हो रहा है ।

६. जनाब अनवर शेख जी की 'फ़ित्ना कादियानी' का हिन्दी अनुवाद हम इसी वर्ष दे देंगे ।

७. हमारे कृपालु व प्रकाशन मन्दिर के संरक्षक श्री जितेन्द्र कुमार जी गुप्त वकील व श्री श्यामलाल जी वकील की प्रबल इच्छा है कि आर्य महाकवि स्व० श्री कैफ़ी जी के 'भारत दर्पण' काव्य को देवनागरी में प्रकाशित किया जाय । राष्ट्र कवि मैथिलीशरण जी गुप्त को 'भारत भारती' के लिए 'भारतदर्पण' से ही प्रेरणा मिली थी । यह हिन्दी साहित्य को एक ठोस देन होगी ।

८. तड़प वाले तड़पाती जिनकी कहानी तृतीय भाग प्रेस में दी जा चुकी है ।

कुछ सहयोगी व संस्थाएँ हमें इस कार्य में सहयोग करेंगी । आप भी सोचिये कि आप इन कार्यों की पूर्ति में किस प्रकार का सहयोग कर सकते हैं ।

लेखराम बलिदान पर्व — विनीत :

६-३-२००५ — राजेन्द्र 'जिज्ञासु'



प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

लेखक परिचय

शताधिक पुस्तकों के प्रणेता प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' का जन्म सन् १९३२ में ग्राम मालोमहे ज़िला स्यालकोट (पश्चिमी पंजाब) में हुआ। आपके पिता श्री जीवनमल जी ग्राम के सर्वप्रथम आर्यसमाजी थे। सातवीं कक्षा में आप में लेखन कला अंकुरित हुई। रक्तसाक्षी पं० लेखराम जी के जीवन व बलिदान से प्रेरणा पाकर आपने लेखनी उठाई। श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय जी आदि कई महापुरुषों के आशीर्वाद व प्रोत्साहन से साहित्य सेवा में जो आगे बढ़े तो फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा।

आपकी कई मौलिक कृतियों का देश की अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका है। कई-कई बार छप चुकी हैं। एशिया महाद्वीप में सर्वाधिक मौलिक जीवनियां लिखने का आपका एक रिकार्ड है।

सन् १९५८ में गुरुद्वारा सिगरेट केस के झूठे अभियोग में अमानुषिक यातनाएं सहने का आपने एक रिकार्ड बनाया। गंगा-ज्ञान-सागर बृहत् ग्रन्थमाला के चार भाग प्रकाशित करके आपने साहित्यिक जगत् को एक निराली देन से समृद्ध कर दिया है। मलेशिया जैसे कट्टरपंथी इस्लामी देश के एक ग्रन्थ में भी आपका जीवन-परिचय छप चुका है। पश्चिमी जगत् में भी आपकी साहित्यिक उपलब्धियों की खूब चर्चा है।

A.B.I. (अमेरिका) जैसी जगत् प्रसिद्ध संस्था ने आपको अपना **Consulting Editor** चुना है।